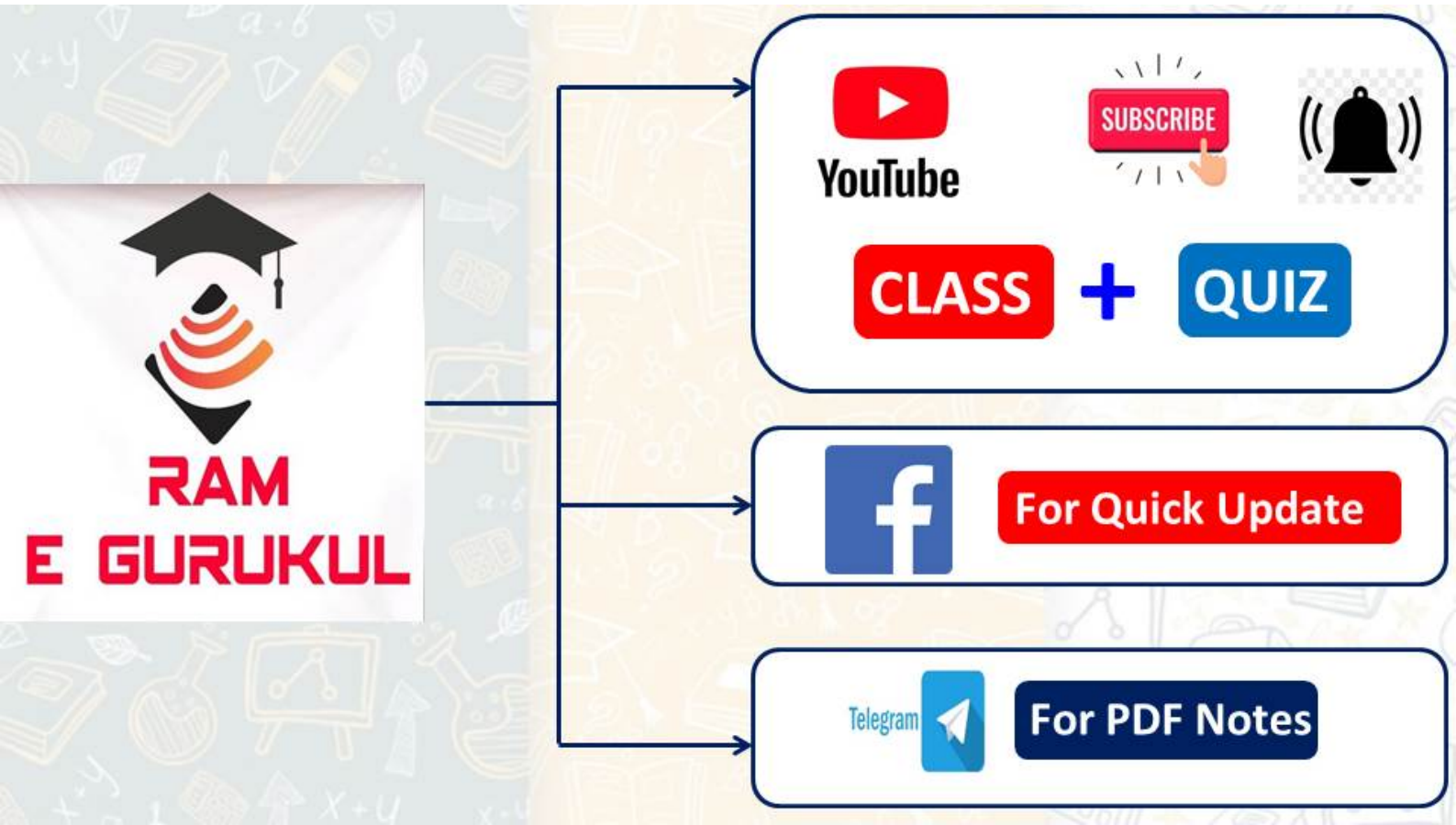
RAM
E GURUKUL
YouTube
SUBSCRIBE
CLASS
+
QUIZ
For Quick Update
Telegram
For PDF Notes

भारत का इतिहास–एक नजर में।

इतिहास शब्द ग्रीक शब्द हिस्टोरिया से लिया गया है जिसका अर्थ है, अन्वेषणों से प्राप्त ज्ञान।
इतिहास के जनक–हैरोडोटस, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के जनक– अलेक्जेण्डर कनिंघम
तात्कालीन वायसराय–लार्ड कैनिंग

इतिहास का विभाजन
- प्राक् इतिहास–लिपी व अक्षर का ज्ञान न था।
- आद्य इतिहास–लिपी व अक्षर का ज्ञान था, लेकिन उनको पढ़ा नहीं जा सकता था।
- एतिहासिक काल–लिपी व अक्षर का ज्ञान था, लेकिन उनको पढ़ा भी जा सकता था। महाजनपद काल से अब तक का समय

पुराणों के अनुसार युग, विष्णु पुराण के अनुसार

- **सतयुग**
  - मत्स्य अवतार – जलीय जीव
  - कूर्म अवतार – उभय चर
  - बाराह अवतार – थल का पशु
  - नरसिंह अवतार – पशु व मानव के बीच की कड़ी
- **त्रेतायुग**
  - वामन अवतार – बौना मानव
  - परशुराम अवतार – शस्त्र प्रयोग करने वाला मानव
  - राम अवतार – समुदाय में रहने वाला मानव
- **द्वापरयुग**
  - कृष्णावतार – पशुपालन करने वाला मानव।
  - बुद्ध अवतार – कृषि कर्म को बढ़ावा देने वाला मानव।
- **कलयुग** – कल्कि अवतार – भविष्य का मानव

प्रमुख संवत
- कलिसंवत–3102BC
- सप्तऋषि संवत–कलिसंवत+25
- बुद्ध संवत 544BC– श्रीलंका की गणनानुसार
- महावीर संवत–527BC
- विक्रम संवत–58BC
- शक संवत 78 AD (कनिष्क)
- कल्चुरी संवत–248 AD
- गुप्त संवत–319 AD
- हर्ष संवत–606 AD
- हिजरी संवत–622AD
- कोल्लम संवत–825AD
- इलाही संवत–1582AD
- राजशक–1673AD

भारत का आदि काव्य/ आदि महाकाव्य – रामायण

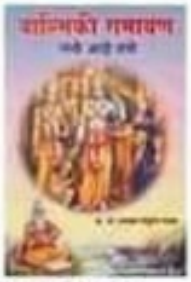

- रचनाकार – वाल्मिक
- काल – 550BC
- काण्ड – 7
- सर्ग – 500
- श्लोक – 24000
- विकास क्रम – 6000–12000–24000
- तामिल अनु – कवि कंबन
- बांग्ला – कृतिवास
- फारसी – अब्दुल कादिर बदांयुनी
- सच्ची रामायाण – पेरियार

विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य महाभारत

- रचनाकार – वेदव्यास "श्रीकृष्णा द्वैप्यायन शास्त्री"
- रचनाकाल – 400BC, भाषा–संस्कृत, 18पर्व
- विकासक्रम – जय–8800–व्यास–युधिष्ठिर
  - जयभारत–24K–शुक्राचार्य–परीक्षित
  - भारतेतिहासा–24K+34–वैषमपायन–जनमेजय
  - महाभारत–100000–लौमहर्ष+उग्रश्रवा–सौनक

चरण–श्लोक–लिखित–व्याख्यानकर्ता

भारत का इतिहास–एक नजर में।

पुरापाषणकाल (प्लस्टोस्टीन हिमयुग)

- आखेटक एवं खाद्य संग्रह काल
- मनुष्य के शारिरिक अवशेष कही से भी प्राप्त नहीं।
- अग्नि का ज्ञान किन्तु प्रयोग से अनभिज्ञ

तीन भाग → निम्न पुरापाषाण काल — क्वार्टजाइट पत्थर का प्रयोग

- **1.चौपर या चापिंग पे बुल संस्कृति**
  - पंजाब की सोहन नदी घाटी से
  - अन्य नाम सोहन संस्कृति
- **2.हैण्ड एक्स संस्कृति**
  - उपकरण सर्वप्रथम मद्रास के समीप बादमदुराई एवं अतिरपक्कम सें।
  - पत्थरों के कोर तथा पलैक प्रणाली द्वारा निर्मित उपकरण।
  - अन्य नाम मद्रास संस्कृति।
  - रोबर्ट ब्रुस द्वारा मद्रास के निकट पल्लवरम नामक स्थान से प्रथम हैण्ड एक्स खोजा गया।

मध्यपुरापाषाण काल
- जैस्पर चर्ट फ्लिंट पत्थरों का प्रयोग
- फलकों की अधिकता के कारण अन्य नाम फलक संस्कृति

उच्च पुरापाषाण काल
- उपकरण ब्लेड के प्रारूप में
- चकमक उद्योग की स्थापना
- आधुनिक मानव होमो सपियंस का उदय

पुरापाषाण काल (5 लाख से 10,000BC)

निम्न पुरापाषाण काल
- 5 लाख से 50K BC
- कोर संस्कृति चौपर, चापिंग, विदरणी
- चौपर चौपिंग उवर भारत–वाडिया
- हैंड एक्स दक्षिण भारत–पल्लवरम
- वूस–पल्लवरम, किंग–अनरिपक्कम

मध्य पुरापाषाण काल
- 50 K से 40K BC
- एच डी सांकलिया
- फलक संस्कृति खुरचनी वेधनी
- नेवासा
- चिरकी
- हथनौरा–मानव कंकाल सर्वप्रथम

उच्च पुरापाषाण काल
- 40K से 10K BC
- मानव उत्पति
- लोहदनाला–मात्रभूमि प्रतिमा
- भीमवेटका–शैलाश्रय
- ब्लैड संस्कृति–खुरचनी, तक्षणी
- होमोसेपियन्स उदय
- हिमयुग समाप्त

भारत का इतिहास–एक नजर में।

माइक्रोलिथिक – मध्यपाषाण काल 10000 से 8000BC सी एल कलाईल 1887

उपकरण–कार्नेलियन स्फटिक, अर्गेट कैसीडोरी आदि पत्थरो से निर्मित, पाषाणकाल के पत्थर उपयोग में सर्वप्रथम प्रक्षेपात्र तकनीकि का प्रयोग आग का प्रयोग, हड्डी व सींग से निर्मित उपकरण पशुपालन शुरू

स्थल

लंघनाज	गुजरात	14 नरकंकाल 8 गर्त चूल्हे
सांभर	राजस्थान	प्राचीनतम वनस्पति के साक्ष्य
नागौर	राजस्थान	पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य
आदमगढ़	मध्यप्रदेश	पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य
लेखइया	मिर्जापुर	17 नरकंकाल सिर पश्चिम पैर पूर्व
मोहरानापहाड़	मिर्जापुर	
बघलीखोर	मिर्जापुर	
सरायनाहर	प्रतापगढ़	37 नर कंकाल हत्या का प्रथम साक्ष्य
महदहा	प्रतापगढ़	सामूहिक नरसंहार, बाह्य आक्रमण कब्र में 4 कंकाल
दमदमा	प्रतापगढ़	कब्र घर के अंदर स्तंभ गर्त, 8गर्त चूल्हे (सामूहिक परि.)

हड्डीसींग के उप. व आभूषण

युगल शवाधान स्तंभ गर्त, गर्त चूल्हे

- 14 नरकंकाल 1 कब्र में 3 नरकंकाल
- 5 कब्र में युगल शवाधान
- 35 कब्र एकल शवाधान
- स्तंभगर्त
- गर्त चूल्हे

- पंचमढ़ी दो प्रसिद्ध शैवाश्रय जम्बूदीप डोरोथीद्वीप
- जल्लाहल्ली, कर्नाटक D आकार के तिरछे फलक
- टेरी तमिलनाडु
- वीरभानपुर पं. बंगाल, पत्थर के औजार की निर्माण हथली

भारत का इतिहास–एक नजर में।

नवपाषाणकाल नामकरण सर जॉन कुब्बाक

प्रमुख
- गार्डन चाइल्ड के अनुसार
- नवपाषाण काल एक क्रांति थी
- उत्तर भारत– ली मेसुरियर
- दक्षिण भारत–नेवेनियन फ्रेजर

साधारण परिदृश्य
- कृषि का ज्ञान शुरूआत
- स्थाई आवास गांव का विकास
- मृदमाण्ड का विकास
- पॉलिशदार चकमक उद्योग
- हड्डी के उपकारण का प्रयोग

सत
- नेवासा–सूती वस्त्र
- हरिनपुर कांच की चूडी
- लुहरादेव–यावन की खेती
- पिकलीहल–राख के ढेर
- संगनकुल्लु राख के टीले
- सारूनारू–आदिम कुल्हाडी
- चिरांद–हड्डी के उपकरण
- कोहलिडवा धान की खेती
- मगरहा–गोलाकार झोपडी
- चौपानी मांडो–झोपडी (मधुमखी के छत्ते)
- दावोजली– कृषि पशुपालन
- मैहरगढ़– कृषि के प्राचीनतम सक्ष्य, गेंहू की तीन, और जौ की 2
- किश्में कच्ची इंटों के आयताकार मकान प्राचीनतम स्थाई जीवन
- बुर्जहोम–गर्तावास पालतु कुत्ते के साथ मालिक का शवाधान

ताम्रपाषाण काल

परवर्तीहड़प्पा संस्कृति (हड़प्पा संस्कृति की समाप्ति पर)
- सिंध क्षेत्र– झूकर झाकर संस्कृति
- पंजाब क्षेत्र–कब्रगाह H संस्कृति

ताम्रपाषाणिक संस्कतियां
- द.पूर्वी राजस्थान बनास तट
- प.मध्यप्रदेश नर्मदातट
- प. महाराष्ट्र
  - 1. अहमदनगर
  - 2. पुणे
  - जार्वे

स्थल
- अहार
- गिलुन्द
- वालापल

- तांबे के उपकरण
- तांबवती
- कपड़े हावाई के ठप्पे
- रंगाई व छपाई उद्योग
- पत्थरों के घर

- कायथा
- मालवा

- मालवा
- नावदाटोली
- नागदा

- एरण
- त्रिपुरी
- उज्जैनी

1
- जार्वे
- दाइमाबाद
- कपास पटसन–नेवासा

2
- इसामगांव
- चंदोली
- सोनगांव

- किलेबंद बस्ती
- वर्गविभाजन

Designed by L&P Sarvtaya

भारत का इतिहास–एक नजर में।

हड़प्पा सभ्यता! सिंधु सभ्यता(सिंधु घाटी सभ्यता)–(कास्ययुगीन सभ्यता)

खोजकर्ता

- मोहन जोदड़ो → राखलदास बैनर्जी
- हड़प्पा → दयाराम साहनी
- लोथल → रंगनाथ राव
- कालीबंगा → बी.बी. लाल
- बनावली → रविन्द्र सिंह विष्ट
- रोपड़ → यज्ञदत्त शर्मा
- सुतकांगेडोर → सर मार्क ऑरल स्टाइन

अन्यबिन्दु

नगर विन्यास– जाल पद्धति पर आधारित सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थी।

वास्तुकला → वास्तुकला का आरंभ सिंधवासियों ने भारत में किया, सिंधु सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी। भवन दो मंजिला व दरवाजे सड़को की ओर खुलते थे मोहन जोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत अन्नागार है।

फर्श कच्चा होता था लेकिन कालीबंगा में पक्के फर्श के प्रमाण मिले है।

कृषि → विश्व में सर्वप्रथम कपास सिंधवासियों ने उगाया

- चावल → लोथल व रंगपुर
- बाजरा → लोथल व सौराष्ट्र
- रागी → रोजदी
- सरसों → कालीबंगा
- गन्ने का साक्ष्य नहीं, बनावली से मिट्टी के हल का खिलौना मिला।

पशुपालन → हाथी व घोड़े से परिचित थे किन्तु उनको पालतू बनाने में असफल रहे।

- सुरकोतदा → घोड़े के अस्थि पंजर
- राणाघुण्डई → घोड़े के दांत
- लोथल, रंगपुर → घोड़े की मृद मूर्तिया
- गैंडा, बंदर, भालू खरहा का ज्ञान था शेर से अनभिज्ञ

व्यापार → मुद्रा प्रचलन न हो कर क्रय–विक्रय वस्तु विनिमय पर था व अन्य देशों के साथ भी व्यापारिक संबंध रहें।

- टिन → अफगानिस्तान ईरान
- तांबा → खेतड़ी (राजस्थान)
- चांदी → अफगानिस्तान, ईरान
- सोना → द. भारत, अफगानिस्तान
- सीसा → ईरान, अफगानिस्तान, राज.
- लाजवर्द → मेसोपोटामिया, अफगानिस्तान

भारत का इतिहास–एक नजर में।

धर्म → मंदिर के सक्ष्य नहीं मिले, मोहन जोदड़ों स्वस्तिक मौहर, कुबड़ वाले सांड की पूजा, वृक्ष पूजा, बबूल पूजा के सक्ष्य मिले।

अंत्योष्टि
- → प्रेतवाद, भक्ति, पुर्नजन्म पर विश्वास
- → पूर्ण समाधिकरण
- → आंशिक समाधिकरण
- → दाह संस्कार

लिपी
- → सर्वप्रथम विचार → अलैक्जैण्डर कनिंघम
- → सिंधु लिपि पढ़ने का सर्वप्रथम प्रयास → LA वैडल
- → भावचित्रात्मक लिपी–लिपी में चिड़िया मानव मछली के आकृति चिन्ह मिले यह बांए ओर लिखी जाती थी।

हड़प्पाकालीन स्थल

हड़प्पा → रावी के तट पर खोजकर्ता–रायबहादुर दयाराम साहनी
- → शंख का बैल
- → नटराज की आकृति वाली मूर्ति
- → पैरो में सांप दबाए गरूड़
- → मछुआरे का चित्र
- → सिर के बल बैठी नग्न स्त्री का चित्र जिसके गर्भ में पौधा निकल रहा है।

मोहनजोदड़ो → सिंधु के किनारे (राखलदास बैनर्जी)– अन्य नाम मौत का टीला
- → पक्की इंटो के भवन, सीढ़ियों के सक्ष्य, प्रवेश द्वार
- → कांसे के नर्तकी
- → एक श्रृंगी पशु की मौहर

लोथल → भोगवा किनारे (रंगनाथराव)
- → गोदीवाड़ा में साक्ष्य मिले, चावल, बाजरा के साक्ष्य
- → दो मुंह वाले राक्षस की मुद्रा, पंचतंत्र की चालाक लोमड़ी
- → ममी का उदाहरण
- → बतख बारहसिंहा गोरिल्ला वाली मुद्रा।

सुरकोत्दा → गुजरात के कच्छ में शॉपिंग कॉमलेक्स के साक्ष्य।
- → घोड़े की अस्थियां

धौलावीरा → गुजरात (भड़ौच)
- → 16 जलाशयों की प्राप्ति।

चन्द्रदड़ो → मनके बनाने का कारखाना
- → कुत्ते व बिल्ली के पद चिन्ह

भारत का इतिहास–एक नजर में।

कालीबंगा → घग्घर नदी के किनारे स्थित
- प्राक्. एवं विकासित हड़प्पा के साक्ष्य
- जुते हुए खेत
- सरसों के साक्ष्य
- एक सोग वाले देवता
- कपाल में छेद वाले बालक का शव अधीन शल्य चिकित्सा उदा.।

रोपण → पंजाब में सतलज किनारे
- मानव तथा कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

वाणावली → हरियाणा
- अच्छे किस्म की जौ
- हल की आकृति वाला खिलौना

सिंधु घाटी सभ्यता के पतन का कारण
- व्हीलर → आकस्मिक अंत
- जॉन मार्शल → भूकंप प्रशासनिक सिथिलता
- अर्नेस्ट मैक → बाढ़
- गार्डन चाइल्ड → विदेशी व आर्य आक्रमण

सिंधु घाटी से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- चंहूदड़ो दुर्गीकुत नहीं था।
- स्टुअर्ट पिग्गट ने हड़प्पा व मोहनजोदड़ो को एक ही साम्राज्य की दो जुड़वा राजधानी कहा।
- मलेरिया के साक्ष्य मोहन जोदड़ो से मिले।
- सिंधुवासी योग से परिचित थे।
- पशुपति की मूर्ति को मार्शल ने आद्य शिव कहा।
- हुलास उत्तर प्रदेश सहारनपुर में गेंहू के साक्ष्य मिले।
- मोहनजोदड़ो की मोहर पर स्वस्तिक का अंकन सूर्य का प्रतीक।
- मोहनजोदड़ो के विशाल स्नानागार को मार्शल ने विश्व का आश्चर्यजनक अजूबा कहा।
- काली बंगा में सप्तसैधव की तीसरी बड़ी राजधानी थी लकड़ की नालियों के साक्ष्य।

भारत का इतिहास–एक नजर में।

वैदिक काल

- ऋग्वैदिक काल 1500–1000BC
- उत्तरवैदिक काल 1000–600BC

वेदों की संख्या 4 थी

ऋग्वेद
- ऋग्वेद की रचना सप्तसैंधव प्रदेश में हुई।
- संकलनकर्ता → वेदव्यास
- प्रमुख → देवताओं के स्तुति मंत्र
- 10 मंडल, 1028 सूक्त, 10462 मंत्र
- II व VII सबसे पुराना X नवीन है।
- ऋग्वेद की समानता जेंद अवेस्ता से पाई गई।
- सरस्वती सबसे पवित्र नदी मानी गई, नदीतमा कहा गया।
- 10 वें मंडल में यमुना 3 बार गंगा 1 बार कहा गया।
- अस्तो मा सदगमय ऋग्वेद से लिया गया है।
- उल्लेख → अग्नि का 200 बार, इन्द्र का 250 बार, इन्द्र को पुरंदर कहा गया है।

मण्डल व रचियता

II	गृत्समद
III	विश्वमित्र
IV	वामदेव
V	कृआत्रि
VI	भारद्वाज
VII	वशिष्ठ
VIII	कण्व ऋषि व अंगरिस
IX	पवमान अंगिरा
X	सूद सूक्तीय महा सूक्तीय

- उपवेद → आयुर्वेद
- ब्राम्हण → एतरेय
- कौशितिकी

ऋग्वैदिक काल
- ग्रामीण सभ्यता
- समाज का आधार परि.
- पितृ सत्तात्मक
- व्यवसाय कृषि पशुपालन

पाठ
- ऋग्वेद के 3 पाठ है
  - साकल → 10 मंडल 117 सूक्त
  - बालखिल्य → 11 सूक्त
  - वाष्खल → 56 मंत्र
- ऋग्वेद का पाठ करने वाला होत्रा कहलाता है।

भारत का इतिहास–एक नजर में।

सामवेद
- भारतीय संगीत का जनक
- संगीत शास्त्र पर प्राचीन ग्रंथ
- सामवेद में सर्वप्रथम सा.रे.गा.मा. की जानकारी मिली
- उपवेद गंधर्ववेद
- सामवेद की 3 शाखाएं है
  - कौथुम
  - राणायणीय
  - जैमिनीय

यजुर्वेद
- यजु का अर्थ यज्ञ होता है, अतः इसमें यज्ञ व बलि संबंधी मंत्रों का उल्लेख।
- इसके 2 प्रधान रूप
  - कृष्ण यजुर्वेद
    - 40 मण्डल 200 मंत्र
    - काष्ठक
    - कपिष्ठल
    - मैत्रेयी
    - तैतरीय संहित।
  - शुक्लयजुर्वेद
    - इसे वाजसनेयी संहित भी कहते है।
    - कण्व
    - मध्यांदिन
- हाथी पालने का उल्लेख
- राजसूय व वाजपेय यज्ञ का उल्लेख
- धनुर्वेद इसका उपवेद है।

अथर्ववेद
- इसे ब्रह्मवेद भी कहते है।
- अथर्वा ऋषि के नाम पर "अथर्ववेद" नाम पड़ा
- 20 अध्याय, 731 सूक्त व 6000 मंत्र है।
- काशी का उल्लेख
- कुरू व परीक्षित का उल्लेख है।
- मगध व अंग में रोग फैलने की कामना की गई।
- उपदेश
  - शिल्पवेद
  - अथर्ववेद
- प्रजापति की पुत्री
  - सभा
  - समीति
- पुरोहित – ब्रह्मा

भारत का इतिहास–एक नजर में।

आरण्यक
- ब्राम्हण ग्रंथो के परिषिष्ट के रूप में पाए जाते है।
- चूंकि इनकी रचना वन में हुई अतः आरण्यक कहलाए।
- प्रमुख 7 आरण्यक इस प्रकार है
  - एतरेय
  - तैतरी
  - मध्यांदिन
  - शंखायन
  - मैत्रायिनी
  - तलवकार
  - वृहदारण्यक

उपनिषद
- भारतीय दर्शन स्त्रोत का जनक
- यह भारतीय दर्शनिक विचारों का प्राचीनतम संग्रह है।
- उपनिषदों की संख्या 108 है।
- तत्वमसि — छांदोग्य
- अश्वमेघ — वृहदारण्यकोपनिषद
- यम् नचिकेता — कठापनिषद
- सत्यमेव जयते — मुण्डकोपनिषद
- एतरेय ब्राम्हण में राजा की उत्पत्ति के सिद्धांत बताए।

वेदांग
- वेदों को समझने व सूक्तियों के सही उच्चारण के लिए वेदांग की रचना हुई।
  - शिक्षा
  - व्याकरण
  - छंद
  - कल्पसूत्र
  - निरूक्त
  - ज्योतिष

वेद	ब्राहमण	आरण्यक	उपनिषद	उपवेद
ऋग्वेद	एतरेय	एतरेय	एतरेय	आयुर्वेद
सामवेद	पंचाविश	छांदोग्य	छांदोग्य	गंधर्ववेद
यजुर्वेद	शतपथ	ब्रहदारण्यक	ब्रहदारण्यक	धनुर्वेद
अथर्ववेद	गोपथ		मुण्डक	शिल्पवेद

भारत का इतिहास–एक नजर में।

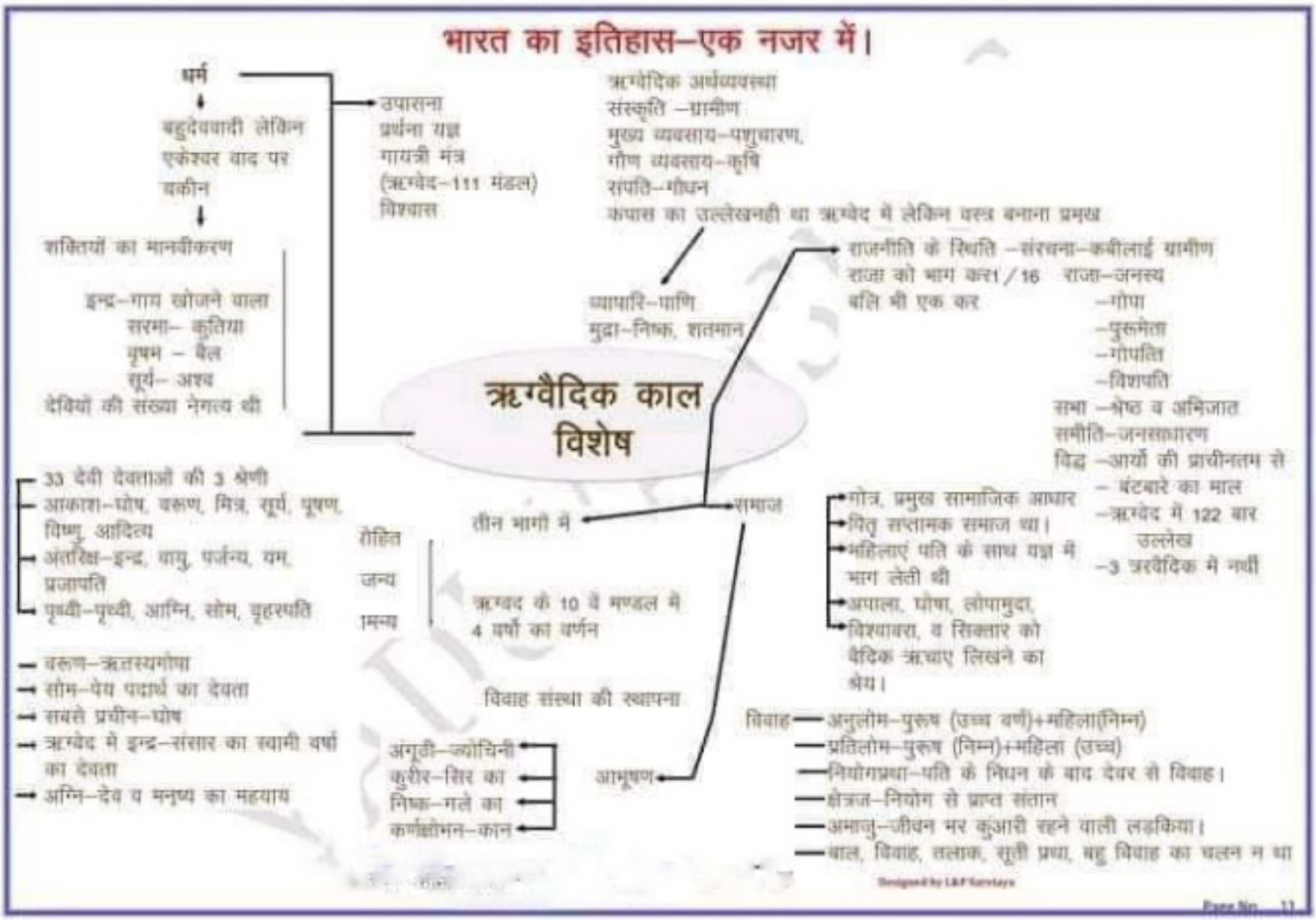

Designed by L&F Services

भारत का इतिहास–एक नजर में।

उत्तर वैदिक काल 1000 BC-600BC

कवीले आपस में मिलकर राज्य बने 800 BC में अतरंजी खेड़ा में लोहे की खोज हुई। अर्थर्ववेद में लोहे को स्याम अयस या कृष्ण अयस् कहा गया।

वर्ण व्यवस्था का उदय हुआ।

राजनीतिक व्यवस्था

- कबी लाई ढांचा टूटा व राज्यों का उदय
- जनका स्थान जनपद ने लिया।
- स्त्रियों की सदस्यता समाप्त
- राष्ट्र शब्द की उत्पत्ति
- राजा के उच्च अधिकारी रत्निन कहलाए।
- बलि के अलावा दो नाए कर भाग व शुल्क आए।

सामाजिक व्यवस्था

- स्थाई जीवन आरंभ
- वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित (चार वर्ण
- एतरेय ब्राम्हण में चारों वर्णो के कार्य का उल्लेख।
- आश्राम
  - ब्रह्मचर्य
  - ग्रहस्थ
  - वान्यप्रस्थ → सन्यास महाजनपद काल में जोड़ा गया
- 4 आश्राम का उल्लेख जावालोप निषद में
- बाल विवाह नही था
- स्त्री शिक्षा ग्रहण कर सकती थी
- विधवा व नियोग प्रथा के साथ अंतर्राष्ट्रीय व अंतर्जातीय विवाह प्रचलन में था।
- स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आई।

भारत का इतिहास–एक नजर में।

ऋग्वैदिक काल विशेष

नदियां

सदानीरा–गण्डक
शतुद्री–सतलज
पुरूष्णी–रावी
वितस्ता–झेलम
विपासा–व्यास
आस्किनी–चिनाव
कुभु–कुर्रम
द्रष्टावती–घग्घर

शब्दावली

- मरूस्थल–धन्व
- गाय–अघन्या
- अनाज–धान्य
- खिल्म–चारागाह
- ब्राजपति–चारागाह प्रमुख
- स्पश–गुप्तचर

यज्ञ–राजसूय– राज्यअभिषेक
वाजपेय–शौर्य प्रदर्शन
अश्वमेघ–राजनीतिक विस्तार
अग्निष्टोम–देवताओं को प्रसन्न

यज्ञ

ब्रहम–वेदों का पाठ कर ब्रम्हा की पूजा
पितृ–सामाजिक श्राद्धो तथा तर्पण द्वारा पितरों की पूजा
मनुष्य– अतिथि सत्कार कर मनुष्य पूजा

देवयज्ञ– देवताओं को प्रसन्न करने हेतु हवन
भूतयज्ञ–भूतों को प्रसन्न करने हेतु

अष्ट विवाह

- ब्रम्हा–समानवर्ण में
- देव–यज्ञ कराने वाले के साथ
- आर्य– कन्या के पिता को वर 2 जोड़ी बैल देता है
- प्रजापत्य–बिना लेन देन विवाह
- असुर– कन्या को माला पिता से खरीदकर
- गंधर्व–प्रेम विवाह
- राक्षस–पराजित राजा की पुत्री/पति/बहन से
- पिशाच–विश्वासघात द्वारा

भारत का इतिहास–एक नजर में।

ऋग्वैदिक काल विशेष

राजनैतिक स्थिति → संरचना–कबीलाई–ग्रामीण

राजा को 1/16 भाग कर बलि भी एक कस्ट

- राजा को जनस्य, गोपा, पुरमेत्रा विशपति,
- गणपति, गोपति का पद प्राप्त था।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई कुल सर्वोच्च इकाई–जन
- सभा–श्रेष्ठ नागों को संस्था
- समीति–जन साधरण संस्था
- विदथ– आर्यों की प्राचीनतम संस्था
  - उत्तरवैदिक मे नहीं था
  - ऋग्वेद में 122 बार उल्लेख
  - उत्तरवैदिक
  - लुटे हुए माल का बंटवारा

क्षेत्र–सप्त सैधव, ब्रह्मवर्त, ब्रह्मऋषि, आर्यवर्त, उत्तशपथ, दक्षिणापथ

समाज
- पुरोहित
- राजन्य
- सामान्य

- गोत्र, प्रमुख सामाजिक आधार था
- पितृसत्तात्मक समाज
- महिलाएं पति के साथ यज्ञ में भाग ले सकती थी
- अपाला घोषा, लोपामुड़ा, विश्वावरा व सिक्ता को वैदिक ऋचा से लिखने कांलेय।
- मुख्य भोजन चावल व जौ,
- अश्वमेघ यज्ञ में थोड़े का मांस खाते थे
- गाय को अघन्य कहा गया।
- दास प्रथा–केवल घरेलु कार्यो में

ऋग्वेद के 10 वे मंडल में 4 वर्ण का उल्लेख

विवाह संस्था की स्थापना हुए

विवाह ➡ अनुलाम ➡ पुरूष (उच्च वर्ण) + कन्या (निम्न वर्ण)

➡ प्रतिलोम ➡ पुरूष (निम्न वर्ण) + कन्या (उच्च वर्ण)

➡ नियोग ➡ पति के निधन के बाद देवर से शादी

➡ क्षेत्रज ➡ नियोग से उत्पन्न संतान

➡ अमाजु ➡ जीवन भार कुंवारी रहने वाली कन्या।

➡ बाल विवाह, सलाक, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बहुपति का रिवाज नया।

भारत का इतिहास–एक नजर में।

1. वर्ण व्यवस्था का जटिल होना एवं आडंबरपूर्ण यज्ञ एवं बलि से युक्त जीवन धार्मिक आंदोलन का कारण बना।

"जैन धर्म"

जैन धर्म की स्थापना का श्रेय उनके प्रथम गुरू/तीर्थकर ऋषमदेव को जाता है। एवं धर्म संगठित करने का श्रेय 24 वे तीर्थकर वर्धमान महावीर को जाता है।

24 तीर्थकरों का विवरण

तीर्थकर	चिन्ह	जन्मस्थल	पिता	माता	निर्वाण भूमि
ऋषभदेव	बैल	अयोध्या	नाभिराज	मरूदेवी	अष्टपद
अजीन नाथ	हाथी	अयोध्या	जितशत्रु	विजय सेना	सम्मेद शिखर
सभवनाथ	घोड़ा	श्रावस्ती	प्रढ़राज	सुषेणा	सम्मेद शिखर
अभिनंदनाथ	बंदर	अयोध्या	स्वयंवर	सिद्धार्था	सम्मेद शिखर
सुमतिनाथ	चकवा	अयोध्या	मेघराज	सुमंगला	सम्मेद शिखर
पद्मप्रभु	लाल कमल	कोशाम्बी	धरणराज	सुमीमा	सम्मेद शिखर
सुपार्वनाथ	सांथिया	बनारस	सुप्रतिष्ठित	पृथ्वीषेना	सम्मेद शिखर
चंद्रप्रभु	चंद्रमा	चंद्रपुरी	महासेना	लक्ष्मणा	सम्मेद शिखर
पुष्पदंत	मगर	कांदी	सुग्रीव	श्रयरामा	सम्मेद शिखर
शीतलनाथ	श्रीवृक्ष	मदिलापुर	प्रढ़रथ	सुनंदा	सम्मेद शिखर
श्रेयांसनाथ	गेंडा	सिंहपुरी	विष्णुराज	विपुलानंदा	सम्मेद शिखर
वासुपूज्य	भैंसा	चंपापुरी	वसुपूज्य	जयावती	चम्पापुरजी
विमलनाथ	शूकर	कंपिला	कातिवर्य	जयश्यामा	सम्मेद शिखर
अमतनाथ	सेही	अयोध्या	सिंहसन	लक्ष्मीवती	सम्मेद शिखर
धर्मनाथ	वज्र	रतनपुर	मानुराज	सुप्रभा	सम्मेद शिखर
शांतिनाथ	मृग	हस्तिनापुर	विश्वसेन	एरादेवी	सम्मेद शिखर
कुंदनाथ	बकरा	हस्तिनापुर	शूरसेन	श्रीकंता	सम्मेद शिखर
अरहनाथ	मीना	हस्तिनापुर	सुदर्शन	मिडासेना	सम्मेद शिखर
माल्लिनाथ	कलश	मिथिला	कुंमराज	प्रजापति	सम्मेद शिखर
मुनिसुव्रतनाथ	कछवा	राजग्रह	सुमित्र	सीमा	सम्मेद शिखर
नमिनाथ	नीलकमल	मिथिला	विजय	वार्मिला	सम्मेद शिखर
नेमिनाथ	शंख	शौरीपुर	समुद्रविजय	शिवादेवी	गिरनार पर्वत
पार्श्वनाथ	सर्प	बनारस	अश्वसेन	वामादेवी	सम्मेद शिखर
महावीर	सिंह	कुण्डलपुर	सिद्धार्थ	त्रिशल्य	पावापुरी

भारत का इतिहास–एक नजर में।

सिद्धार्थ
वज्जि संघ के शासक

बचपन का नाम वर्धमान — (जन्म 540 BC कुण्डग्राम)

सिद्धार्थ (वज्जि संघ के शासक) — पिता — **महावीर स्वामी** — माता त्रिशला–चेटक की बहन

यशोदा–पत्नि

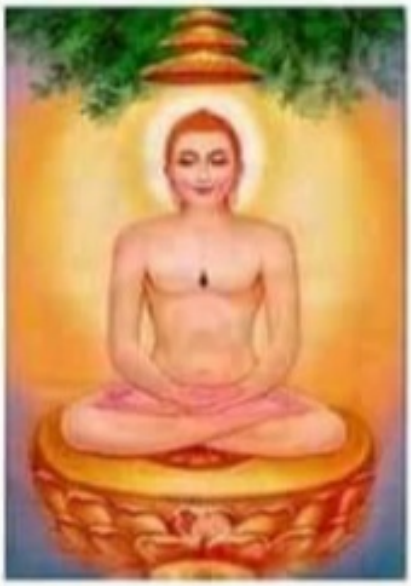

जामालि–प्रियदर्शना / अन्नोजा–पुत्री

दामाद (प्रथम शिष्य / विरोधी)

अध्यक्ष — **जैन संघ**

- महावीर
- सुधर्मन
- जम्बुस्वामी
- केवलिन

जैन संघ → पावापुरी → संरचना

- ज्ञान प्राप्ति स्थल– जम्भिक ग्राम ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे।
- प्रथम उपदेश–वितूलाचल पर्वत
- निर्वाण –468 BC मल्ल प्रधान सृस्तिपाल के यहां।

संरचना:

- आचार्य–सन्यासी समुह प्रधान
- उपाध्यक्ष– धर्म के अध्यक्ष
- तीर्थंकर– अवतार पुरूष
- अर्हत– जोनिर्वाण के करीब हो
- भिक्षु– सन्यासी सदस्य
- श्रावक– ग्रहस्थ सदस्य

चंदना — भिक्षुणियों की प्रथम अध्यक्ष

चेलना — श्राविकाओं की प्रथम अध्यक्ष

श्वेतांबर प्रमुख –स्थूल भद्र

दिगंबर प्रमुख– भद्रबाहु

पंचमहाव्रत
- अहिंसा
- सत्य
- अस्तेय
- अपरिग्रह
- ब्रहमचर्य

त्रिरत्न
- सम्यक ज्ञान
- सायकं दर्शन
- सम्यक चरित्र

दर्शन
- एकांतवात
- स्यादवाद
- अनिश्चवारिता

प्रथम जैन संगीति
300 BC – पाटिलीपुत्र (स्थूलभद्र)
जैन धम्म दो भागो में बंटा

जैन संगीति

द्वितीय जैन संगीति
बल्लभी–512 BC–देवर्धिगण
बिखरे ग्रंथो का संकलन

जैन साहित्य (आगम)

भद्रबाहु में कल्पसूत्र संस्कृत में लिखा

- 12 अंग
- 12 उपांग
- 10 प्रकार्ण
- 6 छेदसूग
- 4 मूनसूत्र

जैन धर्म को आश्रयदेने वाले शासक

- महापद्मनंद
- धनानंद
- बिंबसार
- अजातशत्रु
- उदायिन
- चंद्रगुप्त मौर्य
- बिंदसार संप्राति
- अमोघवर्ष
- चण्ड प्रघोत
- कुमारपाल
- खारवेल

भारत का इतिहास–एक नजर में।

जन्म के समय कालदेव व कौण्डिल्य ने भविष्य वाणी की थी

गौतमबुद्ध

जन्म 563 BC लुंबनिवन (कपिलवस्तु)

शुद्धोधन (पिता)
(कपिलवस्तु के शासक)

माता (महामाया)–कोलीयवंश
पालन–(गौतमी)

यशोधरा (गोपा, बिम्बा)
(पत्नि)

राहुल (पुत्र)

बुद्ध को विचलित करनेवाले दृश्य

गहत्याग–महानिष्क्रमण

वैशाली में अलार कलाम से मिले,
उनसेतप की किया सीखी

उपनिषदों से बुहमविद्या

राजगीर के पास रूद्रकराम से योग

उरूवेला में मोहना निरंचना के
संगम पर 6 वर्ष की तपस्या की

सुश्राताने खीर खिलाकर वृत तोड़ा।

35 वर्ष की आयु में निरंजना नदी के किनारे वैशाख
पूर्णिमा की रात्रि में पीपल वृक्ष के नीचे समाधि
के 49 वे दिन सत्य एवं ज्ञान की प्राप्ति हुई।

ज्ञान प्राप्ति के बाद उरूवेला का यह क्षेत्र बोध गया,
व सिद्धार्थ बुद्ध कहलाए।

चार सत्य
- –दुख
- –दुख समुदाय
- –दुख निरोध
- –दुख निरोधगामिनी

अष्टांगिकमार्ग–सम्यक (द्रष्टि, संकल्प,
वाकू, कर्मात, आजीव, व्यायाम,
स्तूति, समाधि)

बौद्ध संघ–स्थापना–गौतम बुद्ध (सारनाथ)
- –भिक्षु– सन्यासी जीवन
- –उपासक–ग्रहस्थ होकर धर्म अनु0
- –अधिकारी– निर्माण–नवकांभिक
  खाघ–भण्डारिक
  क्रय–काधिकारण
  वस्त्रागार–चीवर

धर्मोपदेश–सारनाथ–प्रथम उपदेश
- –उरूवेला–कश्यपगोत्र का शिष्य
- –राजगीर–बिदुसार,बेलुवन शिष्य
- –कपिलवस्तु–बुद्ध परिवार शिष्य
- –वैशाली–गौतमी त्रवज्या संघ
  प्रमुख
- –पावापुरी– अविसार से पड़ित

शिष्य
- –तपस्सु–कल्लिक
- –पंचवर्गीथ ब्राम्हण
- –सारिपुत्र
- –मोदगल्लायन
- –राहुल
- –नंद
- –उपालि
- –आनंद
- –नीवक, बिबसार, अनावशत्रु,
  प्रसन्ननीव, महाकश्यप

घटनाएं

गहत्याग–महानिष्क्रमण
ज्ञान प्राप्ति–धर्मचक्र प्रवर्तन
प्रथम उपदेश–धर्मचक्र प्रवर्तन
देहवासन–महापरि निर्वाण

प्रतीक
जन्म–कमल
गर्भ–हाथी
यौवन–सांड
ग्रहत्याग–घोड़ा
प्रथम उपदेश–चक्र
ज्ञान–बोधिवृक्ष समृद्धि–शेर
निमार्ण–पदचिन्ह
मृत्यु–स्तूप

भारत का इतिहास–एक नजर में।

- बौद्ध संगीतियां
  - प्रथम –484 BC– अजातशत्रु (राजग्रह)
  - द्वितीय–383 BC–कालाशोक (वैशाली)
  - तृतीय–250 BC – अशोक (पाटिलि पुत्र)
  - चतुर्थ–98 BC – कलिष्क (कश्मीर)
- शिष्या
  - गौतमी
  - यशोधरा
  - नदी
  - आम्रपाली
  - विशाखा
  - क्षमा
  - मल्लिका
- विद्वान
  - अश्वघोष
  - नागार्जुन
  - वसुवुद्ध
  - वुद्धघोष
- साहित्य
  - सुत्रपिटक
  - विनय पिटक
  - अंभिधाभपिटक
- संरक्षक
  - विंबसार
  - प्रसन्नजीव
  - उदायिन
  - चण्ड प्रघोत
  - कनिष्क
  - अश्वेक
  - हर्षवर्धन

भारत का इतिहास–एक नजर में।

भागवत धर्म

6 वी सदी ईसा पूर्व में जैन और बौद्ध धर्म के अतिरिक्त अन्य संप्रदायों का भी उदय हुआ, जो कट्टर पंथी थे, इनमें प्रमुख भागवत व शिवीागवत संप्रदाय से थे। इनके अनुसार भक्ति द्वारा ही ईश्वर तक पहुंचा जा सकता है। इस मत को मानने वाले भागवत कहलाऐ।

–देवकी – वसुदेव– जन्मदाता
–यशोदा–नंद–पालनकर्ता
–यशोदा–नंद का पुत्र–बलराम
–कंश–मामा
–जरासंध–मामा का ससुर
–संदीपनि–गुरू
–घोरा–अंगरिक्ष–गुरू
–कुब्जा–कंश की दासी
–राधा–प्रेमिका
–द्वारिका–राजधानी
–पांचजन्य–शंख

भद्रा
–संग्रामजीत
–बृहतसेन
–शूर
–प्रहरन
–अर्जित
–जय
–सुभद्रा
–वाम
–आयु, सत्यक

रूक्मणी–
–प्रद्रयुम्न
–चारू
–चारूगुप्त
–देशना
–भद्रचारू
–चारूचंद्र
–सुदेशना
–विचारू
–चारू देहा
–सुचारू

सत्यभामा
–भानु
–सुभानु
–भानुमान
–प्रभानु
–सुभानु
–श्रीमानु
–अतिभानु
–बृहदभानु
–प्रतिमानु

श्री कृष्णा

कालिंदि
–श्रुत
–कवि
–वृष
–वीर
–सुवाहु
–भद्र
–शांति
–दर्श
–पूरनमाष
–सोमक

लक्ष्मणा
–अपराजित
–ओज
–सह
–महाशक्ति
–उदंध्वग
–प्रबल
–बल
–सिंह
–गतृमन
–प्रबोध

नग्नजीति / सब्या
–वीर
–चंद्र
–अश्वसेन
–चित्रांगु
–वेगावान
–वृष
–आम
–शंकु
–वसु
–कुंति

पत्नि व पट्रानियों से संताने
मित्रबिंदा
–व्रक
–हर्ष
–अनिल
–गधरा
–वर्धुन
–आनंद
–महर्ष
–पावन
–वन्ही
–सुधि

जाम्बंती
–सांब
–सुमित्र
–पुरूजीत
–सतजीत
–सहर्षजीत
–विजय
–चित्रकेतु
–वासुमान
–द्रतिड़
–कृत

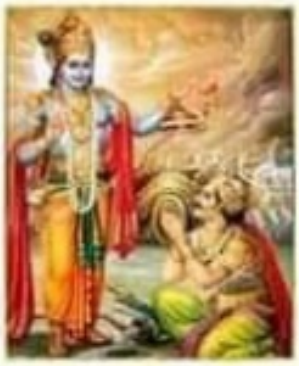

इस धर्म के प्रवर्तक शप्तवंशी श्रीकृष्ण थे, इनके अनुयायी भागवत कहलाए। इसे सात्व धर्म भी कहा गया क्योंकि श्रीकृष्ण का संबंध सात्व धर्म से है।

जैनों के अनुसार–22वे तीर्थंकर अरिष्टेनमी के समकालीन

भारत का इतिहास–एक नजर में।

–विष्णु शब्द प्रथम बार ऋग्वेद में

–महाभारत में गोविन्द कहा गया

–मूल तत्व श्रीमदभागवतगीता

–आगे चलकर भागवत संप्रदाय वैष्णव कहलाया

–गीता में कृष्ण को निष्काम कर्म, कर्मयोग व भक्तियोग का प्रतिवादक बनाया।

श्रीकृष्ण (भागवत संप्रदाय वैष्ण व धर्म

ज्ञान मार्ग
कर्म मार्ग
भक्ति मार्ग
→ गीता के अनुसार मोक्ष प्राप्ति के मार्ग

अमरकेशव गीत

गोविन्द में विष्णु के 39 अवतार का उल्लेख

वास्तविक 10 अवतार

–मत्स्य
–कूर्म
–वाराह
–नरसिंह
–वामन
–परशुराम
–राम
–कृष्ण
–बुद्ध
–कल्कि

वैष्णव धर्म के 4 आचार्य

↓

रामानुजाचार्य

(12वी सदी, विशिष्टाद्वैत, वैष्णव)

↓

निम्बार्काचार्य

(13वी सदी, द्वैतावाद, ब्रम्हा)

↓

माधवाचार्य

(13वी, द्वैतावाद, ब्रम्हा)

↓

विष्णु स्वामी

(13वी, शुद्धाद्वैत, रूद्र संप्रदाय)